सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 172

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
फरवरी – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

पिछले अंक से आगे –

गुरुबंधु की उपर्युक्त मुलाकात के बाद वं. दादाजी ने पूछा – क्या आप लोगों को कुछ साल पहले की प.पू. हाजी बाबा की मुलाकात याद है? उसमें उन्होंने यह बताया था कि इस विश्वव्यापी जगत का विज्ञान जहाँ समाप्त होता है वहाँ हमारे शास्त्र का प्रारंभ होता है। उस समय वह बात सुनकर आपको आश्चर्य हुआ और आप सोच रहे थे कि विभूति यह कैसी असंगत बात कह रहे हैं?अब देखिए डॉक्टर लोगों ने आपको शरीर धारणा से संबंधित शरीर की कार्यक्षमता तथा कार्य नियंत्रण इसकी पहचान कराई है और इलेक्ट्रॉनिक्स के लोगों ने भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार आपको समझाया है कि जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है। क्या अब आप प.पू. हाजी बाबा का वह कहना मानते हैं या नहीं?

वैज्ञानिक लोगों की बुद्धि से तथा संशोधन से आपको देहिक रचना से संबंधित ज्ञान का अनुभव होता है। आपके जीवन में आप नई चीजें देखते हैं और उनको उपयोग में लाते हैं उससे संबंधित ज्ञान की संपूर्ण नींव जो है वह कहीं बाहर से प्राप्त नहीं हुई है तो वह सब इस मानवीय जीवन में ही है लेकिन अपनी दृष्टि अंतर्मुख करके खुद में देखने की दृष्टि आपके पास नहीं हैं। आज शास्त्रज्ञों ने वैज्ञानिक शास्त्र द्वारा आपको भिन्न वस्तुओं में, पदार्थों में विश्व का अनुभव कराया है परन्तु उनके द्वारा निर्माण किए गए सिद्धांत, वस्तुऐं पहले से ही अस्तित्व में हैं। इसको इस तरह समझिए– अगर आपका फोटो निकालना है तो क्या पहले आप है या आपका फोटो? पहले आप खुद है। वैसे ही जो कुछ आपको इस जगत में दिखाई दे रहा है वह किसी बाहर के जगत से नहीं आया है, वह सब इस मानवीय जीवन में अति सुप्त अवस्था में है। इस संदर्भ में मैंने आपको बताया था कि मानवीय देहिक माध्यम करोड़ों हार्मोन्स से, अणु–परमाणुओं से भरा हुआ है। संत तुकाराम जी के एक अभंग में उन्होंने लिखा है, "अणुरेणु थोकटा, तुका आकाशा एवढ़ा", अर्थात देह के अणु–परमाणु बहुत ही छोटे है, तुकाराम आकाश इतना बड़ा है परन्तु यह एहसास तुकाराम जी को कब हुआ?तो जब उन्होंने अपनी दृष्टि अंतर्मुख करके खुद में जो है वह देखा तब!

इस ब्रह्मांड में जो कुछ अस्तित्व में है उस प्रत्येक चीज का परमाणु

श्री परमेश्वर ने मानवीय देह की निर्मिती करते समय मानवीय देह में अंशरूप में दिया है। किसमें? तो हार्मोन्स् के रूप में परन्तु आप वह समझ नहीं पाते हैं। कितने अणु–परमाणुओं का एहसास आज आपको है?किसी का भी नहीं क्योंकि वे आपकी देह में है और आपको प्राप्त हुए जीवन में उनसे कुछ लाभ प्राप्त करना है इसका विचार ही आपने कभी नहीं किया है। अगर आप ऐसे अनेक शास्त्रों की या विज्ञान के आविष्कारों की खोज करोगे तो अंत में आप समझ जाओगे कि वह सब आपमें ही है। परन्तु इसका एहसास ना होने के कारण जीवन प्राप्त होने के बाद आपने आपके अनेक दिन–रात सिर्फ खाना, पीना और सोना इस क्रिया में व्यर्थ खर्च किए है। ईश्वर ने आपको जगत कल्याण के लिए मानवीय देह यह अनमोल अमानत दी है लेकिन आप उसे वैसे ही वापस लेकर जाते है। इसलिए पिछले सम्मेलन में प.पू. कुतुब बाबा की मुलाकात में यह वाक्य था – ''अरे बंदे, जब तू दुनिया में आया तब तुझे पूरा सवा रुपया दिया था लेकिन तूने 1 रुपया खो दिया और तू केवल 4 आना वापस लेकर आया है।'' क्या आपको यह वाक्य याद है?इसका अर्थ बहुत ही गहरा है। इसमें परमेश्वर इन्सान की मृत्यु के बाद उसे कहते है, ''अरे मानव, मैंने तुम्हें पूरा सवा रुपया देकर दुनिया में भेजा था परन्तु तुमने दुनिया में जन्म लेने के बाद क्या किया?तुम्हारी देहिक संपत्ति में जो कुछ इस विश्व में मानवीय जीवन को साकार करने के लिए उपयुक्त था उसकी ओर तुमने ध्यान नही दिया। तुमने ध्यान किस पर दिया?खेलना, खाना, कपड़ा पहनना, ऐश–आराम करना और सोना जो कि तुम्हारे जीवन का सिर्फ चार आना हिस्सा (भाग) है। तुमने 1 रुपया गंवाया मतलब तुम्हारी देहिक संपत्ति तुम्हारे पास ही थी लेकिन उस पर लक्ष्य केंद्रित करके उससे कुछ लाभ प्राप्त करना है इसका विचार ही तुमने नहीं किया। इस संदर्भ में प.पू. कुतुब बाबा की मुलाकात का वह वाक्य है।

इस विश्व के परे भी कुछ है। वहाँ हमारा ज्ञान, विचार, हमारी दृष्टि या आकलन करने की बुद्धि पहुँच नहीं पाती। इसके बारे में वेदों को कहना पड़ा है, ''नेति नेति'' लेकिन हमारे गुरुमार्ग में हम उसके भी परे जा रहे हैं। यह कैसे देखिए – आज दो सालों से हम साधना सम्मेलन आयोजित कर रहे है। इन सम्मेलनों में मैंने अनेक विषय आपके सामने रखे है। इन विषयों के बारे में क्या कभी आपने कहीं पढ़ा है?नहीं। ऐसा क्यों?इसका कारण मैं आपको बताता हूँ। मैंने कोई चौर्यकर्म (चोरी) नहीं किया है या किसी का झूठा नहीं खाया है। मैं ऐसा ना करूँ यह मेरे गुरु की इच्छा थी इसलिए मेरे गुरु ने 8 साल की उम्र में सिर पर हाथ रखकर मुझे इतना ही आशीर्वाद दिया था, ''पढ़ाई करके जगत को आग मत लगाओ, जगत में जो आग लगी है उसे बुझाओ।'' इसके अनुसार अंग्रेजी चौथी कक्षा में मेरी पढ़ाई समाप्त हो गई और वह यथार्थ ही था। आज मैं अनेक विषयों के बारे में आपको बताता हूँ जैसे कि इलेक्ट्रॉनिक्स शास्त्र, वैद्यकीय शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, गायन शास्त्र परन्तु मैंने उन विषयों के बारे में कभी भी विसंगत बातें नहीं बताई। यह सब ज्ञान मैं कैसे बता सकता हूँ और क्या आप वह नहीं बता पाओगे?इसके बारे में यह स्पष्टीकरण है – अनेक लोग मुझे यह सवाल पूछते है, ''आपने गायन यह विषय कहाँ से सीखा हैं? आप जो आरतियाँ गाते हैं उनकी धुन किसने बनाई है?मैं उन्हें यह जवाब देता हूँ, ''मैंने गायन यह विषय प.पू. बाबा से, ईश्वर से सीखा है और ईश्वर ने ही आरतियों की धुन बनाई है। वैज्ञानिक शास्त्र या अन्य किसी भी शास्त्र के जानकार या निपुण व्यक्ति के साथ मैं कैसे संवाद कर पाता हूँ?ये व्यक्ति जिस भी विषय का अध्ययन करते है वह विषय इस विश्व के विषयों के परे नहीं है। इसलिए उस विषय से संबंधित अणु–परमाणु हमारे शरीर में हार्मोन्स् के रूप में है, आपमें भी है और मुझ में भी है। मैंने गुरुभक्ति की है मतलब क्या किया है? मैंने कोई ढोंग नहीं किया है। मैंने उस गुरुभक्ति/गुरुशक्ति का मुझ में एकरूपत्व किया है और मेरे संपूर्ण शरीर में इस विश्व के सारे विषयों के जो हार्मोन्स् है उन्हें गुरुशक्ति से जोड दिया है। मेरे सारे हार्मोन्स् गुरुशक्ति से एकरूप होने के कारण मैं गुरुशक्ति द्वारा ये सारे विषय सुसंगत रीति से अखंड बोल सकता हूँ। इस प्रकार की अवस्था के बारे में गुरुमार्ग के बाहर के साधक कहते है, ''हमें अंतर्ज्ञान प्राप्त हुआ है या दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ है।'' आपको विषय समझाने के लिए मैंने यहाँ पर इतने सारे चार्टस् बनाए है। इनमें से कोई भी एक चार्ट ऐसे अंतर्ज्ञान या दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ बाहर का साधक बना नहीं पाएगा।

देह की सूक्ष्म स्थिति की अंतर्गत रचना कैसे होती है?डॉक्टरी शास्त्र में भी आप जीवित व्यक्ति की देह काटकर अंतर्गत रचना देख नहीं सकते। जिसके प्राण निकल गए है ऐसा शव काटकर आप शरीर की अंतर्गत रचना का अभ्यास करते हुए कुछ अनुमान निकालते हैं परन्तु देह में जीव या चैतन्य का अस्तित्व होते समय वह किस प्रकार से कार्य करता है यह मैं गुरुशक्ति द्वारा अपनी आँखों से देख सकता हूँ। यह मैं कैसे देख सकता हूँ?पिछली बार आपको बताया था कि ब्रेन के नीचे परदा क्यों होता है?शरीर के कुछ अवयव उसी स्थान पर क्यों

होते है?यह विषय ऐसा नहीं है कि आपको बताने से पहले मैंने किताब खोलकर वह पढ़ा है और फिर आपको उसके बारे में बताया है बल्कि यह एक दिव्य साधना है जिसके कारण गुरुशक्ति द्वारा जगत के सर्व विषयों का ज्ञान अपने आप प्रकट होता है।

ईश्वर को प्राप्त करने के बाद ईश्वर से यह नहीं पूछना है कि मोक्ष कब प्राप्त होगा?मुक्ति कब मिलेगी? फिर ईश्वर से क्या पूछना है?मेरे काया, वाचा, मन की यह शरीरधारणा मुझे इस जगत में ही छोड़कर जाना है। मेरे शरीर रूपी मिट्टी का इस जगत के कल्याण के लिए कैसे उपयोग होगा?यह ईश्वर से पूछना है। अरे, अगर मोक्ष या मुक्ति मांगने के लिए आप जन्म लेकर आए हैं तो आप जैसे नपुंसक (बलहीन) और डरपोक आप ही है। मोक्ष, मुक्ति चाहिए ही क्यों?मोक्ष, मुक्ति कौन मांगता है? जिसके नरजन्म का सार्थक नही होता और जो डरपोक है वह फिर से इस नरजन्म के यानी जन्म–मरण के बंधन से भागने के लिए मोक्ष मांगता है। मैंने कभी ईश्वर से मोक्ष नहीं मांगा बल्कि ईश्वर से यही पूछा, ''यह जन्म आपने ही दिया है। अब इस जन्म का सोक्ष (सार्थक) कैसे करूँ यह आप ही बताइए।'' अगर रोते हुए ईश्वर से मोक्ष की मांग की तो वे कहते है, ''तुमने भीख मांगकर आखिर क्या मांगा?तो मोक्ष यानी सत्यानाश! वह तो तुम ही करने वाले हो। जीवन का सत्यानाश करने के लिए साधना की आवश्यकता नहीं है, उसके लिए तुम्हारा कर्म ही तुम्हारे लिए पर्याप्त है। आपका कर्म आपको मिट्टी में मिलाने के बाद भी बाकी रहने वाला है और आपको फिर से जन्म देने वाला है, वह आपको छोड़ने वाला नहीं है। आप अपने कर्म के ऋणी (देनदार) हैं तो वह आपको क्यों छोड़ेगा?इसलिए अगर ईश्वर प्रसन्न हुए तो उनसे क्या मांगना है यह तय कीजिए।

यह सब आपको बताने का उद्देश्य क्या है?अब आपको ॐकार साधना प्राप्त हुई है। इस ॐकार साधना की कार्यक्षमता कितनी है? 'अमर्याद' (जिसकी कोई सीमा नहीं) है। आपको इस ॐकार साधना की केवल प्रारंभिक अवस्था ही अभी प्राप्त हुई है तो आप तृप्त हो गए हैं। मतलब ॐकार साधना की प्रारंभिक अवस्था में आप काया, वाचा, मन से एकरूप होकर संतुष्ट हुए है तो फिर सिद्धता प्राप्त होने के बाद क्या होगा?ॐकार साधना की सिद्धता प्राप्त होने के बाद आपके माध्यम द्वारा क्या सिद्ध करना है इसका उद्दिष्ट औरों को पूछने के बजाए आप वह प.पू. बाबा से ही पूछिए। आपके शरीर में विश्व का सारा विज्ञान सुप्त अवस्था में है और उसके बारे में आप अज्ञानी है इसलिए आपको उसका एहसास नहीं है। आपको प्राप्त हुई ॐकार शक्ति आपके शरीर में संबंधित माध्यमों के स्थान पर जाएगी फिर उन माध्यमों में अंतर्भूत इस विश्व के सर्व विषय तथा उन विषयों के परमाणु जब उस शक्ति से एकरूप होंगे तब यह संपूर्ण ब्रह्मांड आपके कदमों में प्रणाम करेगा! इसॐकार साधना का कर्तृत्व यानी कार्य इतना महान है।

जब आप यहाँ आए थे तब आरंभ में ही इस तरह के सम्मेलन आयोजित करना या इस तरह की साधना करना यह हमने क्यों नहीं किया?भक्तों ने जवाब दिया, ''अभी ये जो विषय है उसके लिए उस समय हमारे माध्यम पोषक नहीं थे। उस समय हमारे काया, वाचा, मन कार्यक्षम या विकसित नहीं थे।'' वं. दादाजी ने कहा, ''ऐसी बात नहीं है। उस समय आपके संपूर्ण जीवन में अनावश्यक ऋणानुबंधों का हितसंबंध आपके ज्ञान–अज्ञान से धारण हुआ था इसलिए उस समय आपके देह माध्यम में 'कारणदीक्षा' को समाना आपके लिए संभव नहीं था। मतलब ये सब जो सूज्ञता से अब हुआ है वह आपके हितार्थ ही हुआ है।''

आज आपको कारणदीक्षापरत्वे ॐकार तत्व प्राप्त हुआ है। यह तत्व आपने जगतकल्याण का हितार्थ साकार करना है। इसके बारे में आप किस तरह से विचार करते हैं?क्या आपको ऐसा लगता है कि कोई बड़ी–सी जगह में बड़े–बड़े फोटो रखकर केंद्र पर जैसे कार्य हो रहा है वैसा कार्य शुरु करना चाहिए?इसे इस तरह से समझिए – आजकल सरकार ने वृक्ष लगाने की योजना चलाई है। वृक्ष क्यों लगाते है?वृक्षों में यह गुणधर्म होता है कि वे वातावरण यानी हवा में जो दोश होते है वे खुद में धारण कर लेते है। वृक्ष जमीन से जल लेते है और हवा में जो दोश होते है वे खुद में धारण करके उन्हें जमीन में यानी मिट्टी में विसर्जित करते है, नष्ट करते है। इसलिए सरकार ने वृक्ष लगाने की योजना कार्यान्वित की है। यहाँ उपस्थित आप सब लोगों ने इन वृक्षों जैसा ही कार्य करना है। समाज में विज्ञान के संशोधन से जो अशुद्धता निर्माण हुई है उसे आपने निवारण करना है। विज्ञान के कुछ आविष्कारों के कारण आज वातावरण यानी हवा अत्यंत अशुद्ध हो गई है। उदाहरण के तौर पर देखिए आज मुंबई में कितना प्रदूषण है! जिस तरह हवा में अशुद्धता निर्माण हुई है उसी तरह मानवीय जीवन में भी विषमता और अशुद्धता निर्माण हुई है। इसका अनुभव आपके ही जीवन के बारे में है– अब आपको कारणदीक्षा प्राप्त हुई है।

कारणदीक्षा प्राप्त होने से पहले आपको आपकी घर-गृहस्थी में विशमता और अशुद्धता का अनुभव होता था और आज वही नित्य की घर-गृहस्थी में कारणदीक्षा प्राप्त होने के बाद आपको समाधान का अनुभव हो रहा है। आपकी घर-गृहस्थी में नये से कुछ नहीं आया है लेकिन परिवार में आप चार व्यक्तियों के आचार, विचारों में बदलाव होने का अनुभव अब आपको हो रहा है। ऐसा क्यों? वे सारे लोग तो गुरुमार्ग में नही आए है। इसका जवाब इस प्रकार है– उन व्यक्तियों के दोषों की धारणा आपके देहिक माध्यम में हो सके इसलिए आपके देहिक माध्यम में आपके अनेक जन्मों के दोषपरत्वे जो अशुद्धता थी उसे निकालकर अब औरों के दोष आपके देहिक माध्यम में समाने की क्रिया आपको 'गुरुपाशीर्वाद' से प्राप्त हो गई है। अब आपके परिवार में वात्सल्य का वलय, प्रेम, अपनापन, आदर निर्माण हुआ है। यह कैसे हुआ है?आपके परिवार के सदस्यों के दोष आपमें समाने लगे हैं और उन दोषों का आप पर विपरीत परिणाम ना हो इसलिए आपको इतनी प्रखर दीक्षा दी है कि उनके दोष आपमें धारण होने के बाद आपकी नित्य साधना द्वारा उन दोषों का निर्मूलन हो रहा है। इस तरह के कार्य की योजना अब गुरुमार्ग में चल रही है।

मान लीजिए कि यहाँ शिरोड़ा में मुंबई के 100 लोग उपस्थित है। इन 100 लोगों में से अगर प्रत्येक व्यक्ति दिन भर में 10 लोगों के साथ किसी ना किसी काम या कारण से संपर्क में आता है तो इस हिसाब से 100 X 10 = 1000 लोग हो गए। इन 1000 लोगों के दोष हमारे 100 लोगों में धारण होकर उनकी नित्य साधना द्वारा विसर्जित हो जाऐंगे। इस तरह वातावरण में और मानवीय जीवन में निर्माण हुई विषमता तथा अशुद्धता हमारे सेवकों द्वारा निवारण होगी। अब इस तरह से कार्य करने का काल आया है क्योंकि लोगों के पास समय नहीं है। पहले के जमाने में यह कार्य साधु–संतों द्वारा होता था। साधु–संत जगत के दुष्कर्मों का बोझा उठाते थे। पहले के जमाने में गाँव के सारे लोग दिन भर के काम पूरे करने के बाद शाम को मंदिर में बैठकर कीर्तन, भजन, सत्संग या अन्य कुछ धार्मिक बातें सुनते थे। आज किसी के भी पास समय नहीं है। आज यदि कोई कीर्तन या सत्संग करेगा तो वह सुनने के लिए कितने लोग जाएंगे?पहले के जमाने में संत, सत्पुरुष प्रवचन द्वारा या अन्य प्रकार से लोगों को मार्गदर्शन करके उनके आचार, विचारों को निश्चित दिशा देते थे।

आज केवल अनुकरण का काल है। दाड़ी बढ़ाना, कफनी पहनना, गले में रूद्राक्ष माला धारण करना, बाल बढ़ाना, भस्म लगाना, इत्यादि गुरुमार्ग के आभूषण माने जाते है लेकिन क्या यह करने से आप गुरुमार्गी होते है? नहीं। किसी व्यक्ति के बिना जाने उसके आचार, विचारों में परिवर्तन होकर उसने अपने परिवार के प्रति इष्ट कर्त्तव्यों का एहसास रखकर अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाना मतलब गुरुमार्गी होना है। यह कार्य आपके कफनी पहनना, दाड़ी बढ़ाना या बाल बढ़ाने से नहीं होता, यह कार्य होता है 'कारणदीक्षा' द्वारा।

शेश आगे अंक में –Continue ....

।। शुभं भवतु।।

सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible